भा०कृ०अनु०प० का पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना

दिनांक: 24-07-2026

बिहार में अल नीनो के प्रभाव को कम करने कृषि परामर्श

जुलाई माह के तीन सप्ताह बीत जाने के बाद भी लगभग 37% की कमी के साथ, राज्य में अब तक मानसूनी वर्षा की स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। राज्य के दीक्षिणी जिले विशेषकर जहनाबाद में बारिश की भारी कमी (70%) देखी गई है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के पूर्वानुमान के अनुसार, 28 से 30 जुलाई में राज्य में दक्षिण-पश्चिम एवं उत्तर-पश्चिम जिलों के अनेक स्थानों पर (मध्यम से भारी स्तर की) वर्षा होने की संभावना है। अगले 3-4 दिनों के दौरान राज्य के अनेक स्थानों पर अधिकतम तापमान में बढोतरी होने की संभावना है, तत्पश्चात् इसमें गिरावट होने की संभावना है जबकि अगले 5 दिन तक राज्य के अनेक स्थानों पर न्यूनतम तापमान में कोई विशेष परिवर्तन होने की संभावना नहीं है। अल नीनो जनित इन मौसमीय चुनौतियों से निपटने और फसलों को इसके संभावित नुकसान से बचाने के लिए, राज्य के किसानों को भा०कृ०अनु०प० का पूर्वी अनुसंधान परिसर के वैज्ञानिकों द्वारा कुछ महत्वपूर्ण उपायों को अपनाने की सलाह दी गई है:

- फसल विविधीकरण को अपनाएँ और ऊपरी भूमि या पानी की कमी वाले क्षेत्रों में, धान की जगह अरहर (उन्नत किस्में जैसे कि मालवीय 13, आईपीए 203, पूसा 992, यूपीएएस 120, राजेंद्र अरहर-1, बहार) को लगाएं। बुवाई के समय बीज की दर में 15-20% की वृद्धि करें। मेड़-नाली विधि से बुआई करना ज्यादा उपयुक्त है। किसान अरहर की खेती मेड़ों पर भी कर सकते हैं और अरहर के साथ मिश्रित खेती भी अपना सकते है जैसे: अरहर + मक्का (1:1), अरहर + तिल (2:1) और अरहर + उड़द (1:2)।
- इसके अलावा किसान अन्य वैकल्पिक फसलों को जैसे कि मक्का (डीकेसी 9081 और सूखा-सहनशील हाइब्रिड-डीएचएम-117, एचक्यूपीएम-1, एचक्यूपीएम-5, शक्तिमान-1, शक्तिमान-4) और रागी (वीएलएम 379, आरएयू 8, बांकुला) भी लगा सकते हैं।
- बुवाई से पूर्व, बीजों को राइजोबियम + पीएसबी + ट्राइकोडरमा से उपचारित करें अथवा 2% केसीएल (पोटेशियम क्लोराइड) के घोल में 6-8 घंटे तक भिगो कर बीजोपचार करें।
- धान की रोपाई के लिए 18-25 दिन पुराने पौधों का उपयोग करें और पौधों के बीच की दूरी घटाकर 15×15 सेमी करें।
- खेतों की मेड़ों की मरम्मत करें ताकि वर्षा की स्थिति में पानी का रिसाव न हो। वर्षा जल संचयन और उसे खेत में रोके रखने की क्षमता बढ़ाने के लिए मेड़ों की ऊँचाई (30-35 सेमी तक) बढ़ा दें। खेत को लगातार पानी से भरकर रखने के बजाय 'वैकल्पिक गिला और सूखा' सिंचाई पद्धति अपनाएं।
- खेत की सिंचाई केवल तभी करें जब मिट्टी की सतह पर हल्की दरारें दिखने लगें। यदि संभव हो तो, फसलों की सिंचाई के लिए टपक अथवा फव्वारा पद्धति अपनाएं, इससे 50% तक पानी की बचत होती है।
- संभावित वर्षा के जल संचय हेतु, यथासंभव खेत के एक छोटे से हिस्से में गड्ढानुमा आकार अवश्य बनाएं। वर्षा संकट के समय यह पानी पूरी फसल को बचा सकता है।

- खेत की कतारों के बीच सूखी घास, पुआल या प्लास्टिक शीट (मल्चिंग) बिछा दें। इससे जमीन की नमी लंबे समय तक बनी रहती है और साथ ही यह खरपतवार नियंत्रण में भी सहायक है।
- उचित पोषक तत्व प्रबन्धन के लिए गोबर की खाद, केंचुआ खाद (वर्मीकंपोस्ट) का उपयोग करें। यह जैविक खाद मिट्टी की पानी रोकने की क्षमता को बढ़ाते हैं। बुवाई के समय एक ही बार में भारी मात्रा में नाइट्रोजन (यूरिया) देने के बजाय, इसे 3-4 बार में थोड़ा-थोड़ा करके दें।
- वर्षा की कमी के कारण, फसलों की वानस्पतिक वृद्धि के चरण में आने वाले तनाव जैसे सूखा या पोषण की कमी से उबरने के लिए पत्तियों पर 2% यूरिया या एनपीके (15:15:15) के घोल का छिड़काव करें।
- धान की बुआई/रोपाई के कुछ दिनों के भीतर ही अंकुरण-पूर्व खरपतवारनाशी जैसे पेंडिमेथालिन (सक्रिय तत्व) का 1.0 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर या प्रेटिलाक्लोर (सक्रिय तत्व) का 0.75 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें और बुआई के 15-20 दिनों पर अंकुरण-बाद खरपतवारनाशी जैसे बिस्पायरीबैक सोडियम (सक्रिय तत्व) का 25 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव, खरपतवार में 2-3 पत्ती की अवस्था में करें। जहाँ संभव हो, खरपतवार प्रबंधन के लिए कोनो-वीडर का प्रयोग करें।
- अत्यधिक वर्षा की स्थिति में, खेतों में लंबे समय तक जल-जमाव से बचने के लिए धान, मक्का, तिल और अरहर के खेतों में पानी की लगातार निकासी सुनिश्चित करें।
- तेज़ वर्षा की स्थिति में, जानवरों को शेड के अंदर रखें और उन्हें संतुलित चारा दें।